

COTTON *Innovate*



Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue :2, Volume : 5, May 2016

A weekly newsletter from ICAR-CICR

Surveillance and Monitoring on whitefly and CLCuD by CICR Scientists in north zone

CICR, RS, Sirsa Scientists Drs. Surender Kumar Verma, Principal Scientist (Plant Breeding) and Rishi Kumar, Principal Scientist (Entomology) conducted surveillance for whitefly in cotton in Punjab/Haryana areas from Dabwali- Bathinda- Jaito- Faridkot fields on 3rd May, 2016. The population of whitefly was recorded on moongbean (1-2/3 leaves), cucurbits (1-2/leaf), chillies (0-1/3leaves) and tomato (no whitefly). However a good number of whitefly was observed on jangli mirch weed host (1-4/3leaves). Other team consisting Drs R.A. Meena, Principal Scientist, Seed technology and S.K. Sain, Senior Scientist Plant Pathology conducted the surveillance and monitoring on 5th April 2016 on the route Sirsa-Dabwali-Malout-Abohar-Ganganagar-Hanumangarh-Ellenabad-Sirsa covering the state Haryana, Punjab and Rajasthan. It was observed that the cotton sowing is still not done in most of the area of Punjab due to delayed wheat harvesting but in few fields the field preparation is going on near malout – Abohar. However, on the route from Ganganagar – Hanumangarh – Ellenabad - Sirsa the sowing of Desi cotton has been done in the areas where the irrigation water was available and the crop is at germination stage (7-10 days) and no whitefly incidence was recorded on the cotton. On the survey route, the whitefly incidence was recorded in few fields of vegetables including tomato, brinjal, chilli, tomato, sponge gourd up to the level of 1-3/ leaf. In addition to low level of whitefly the occurrence of beneficial insects like Coccinelids, Chrysoperla, spiders, were also observed in the vegetable fields. Dr O P Tuteja, Principal Scientist, Crop Improvement on dated 07-05-2016 covered the villages Farwai Kalan, Bharokha, Baruwali of Sirsa District, Haryana. At Baruwali only two plots of Desi and American cotton were observed. On desi cotton 1-2 whiteflies per 3 leaves were observed, whereas no whitefly was observed on American cotton. At Farmai Kalan the cucurbits and okra fields were observed and no whitefly incidence was seen. In Punjab village Jhanda khurd and Sardulgarh Area was visited. On moongbean 1-2 whitefly/plant incidence was seen. Again during visits in Hanspur, Nagpur, Haroli and Rattakhera villages of Ratia tehsil of Haryana no cotton fields were observed as the sowing of the crop is going on. However, Okra and Jowar fields observed with whitefly incidence. 1-2 whiteflies/plant were seen on Okra and no incidence on Jowar. In Fatehabad, Daryapur, Bhawadin, Sangasandha, Darbi, Sikanderpur, Rasulpur and Ved wala villages no cotton fields were seen as the sowing is in progress. No incidence of cotton leaf curl virus disease was noted at any of the locations in north zone.

Training Program on Cultivation of Desi Cotton

A training program on “Desi Kapus Lagwad Prashikshan Shibir” (Training Program on Cultivation of Desi Cotton) for farmers of four districts was organized by ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur with the special help of Yuva Rural Association (Y.R.A.) on 28.04.2016. Around 65 farmers from different villages of Nagpur, Wardha, Amravati and Bhandara districts of Maharashtra attended the program. The function was chaired by Dr. K. R. Kranthi, Director, CICR, Nagpur while it was graced by Shri. Datta Patil (Y.R.A.). Other participants Shri Padole (Neem Foundation), Dr. Baize Disuza, Head, Crop Protection, CICR, Nagpur, Dr. R. B. Singandhupe, In-charge, KVK, CICR, Nagpur, Dr. Punit Mohan, Principal Scientist, Dr. V. Santhy, Senior Scientist, Dr. Sunil Mahajan, Senior Scientist, Dr. Saravanan M, Scientist also attended the meet. Director, CICR elaborated the importance of desi cotton in comparison with Bt cotton. He also emphasized the future demand and dependency of market for surgical cotton. Shri. Datta Patil (Y.R.A.) shared his experience regarding how his organization has organized and monitored the seed production of desi cotton, Phule Dhanwantari on farmer’s field, ginned and processed at CICR, Nagpur. Different farmers have also exchanged their experiences based on the cultivation of *desi* surgical cotton var. Phule Dhanwantari in previous year. They showed their willingness to grow the desi cotton in next season also. The farmers experienced that the cost of cultivation of *desi* cotton is much less due to less use of inputs like pesticides and fertilizers as compared to the Bt cotton. ‘Package of Practices’ (PoP) of *desi* surgical cotton var. Phule Dhanwantari was presented by Dr. Sunil Mahajan through power point presentations and its ready reckoner cards have also been distributed to the farmers. The 4 kg bag of quality seed of *desi* surgical cotton var. Phule Dhanwantari for one acre to each farmer was also distributed on payment basis by the Yuva Rural Association.



Newspaper coverages

पंजाब केसरी 6-5-16

कपास की उन्नत खेती के गुरु देगा रिसर्च सेंटर

240 एकड़ में कॉटन के डेमोस्ट्रेशन प्लांट लगाने का लक्ष्य

सिरसा, 6 मई (का.प्र.): कपास की रिसर्च में लगे केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र की ओर से कॉटन की उन्नत खेती को बढ़ावा देने के लिए 240 एकड़ में डैमो प्लांट लगाने की कार्ययोजना तैयार की गई है। केंद्र की ओर से कमीशन में किसानों की 200 एकड़ पर कॉटन की कारखाने इसके अलावा केंद्र फार्म में 40 एकड़ में लगाए जाएंगे। बी.टी. की वैश्वयुक्त लगाई फार्म में 40 एकड़ चुकी है जबकि फार्म में प्लांट लगाए जा दखलसल देश को बढ़ावा देने कोयम्बूर और सि है। सिरसा रिसर्

बताया कि इन प्लांटों को लगाने का उद्देश्य किसानों को सही विजाई की तकनीकी जानकारी देना, सिचाई, नरमे में खरपातवार की गुड्राई और साफ चुगाई के बारे में संबोधित गांवों के किसानों को विस्तार से जानकारी दी जाएगी। गीतल्लव है कि अक्सर किसान बिना वैज्ञानिकों की राय लिए अक्सर

सिरसा अमर उजाला

सफेद मक्खी का तोड़ निकालने में जुटे वैज्ञानिक

गंगानगर, हिसार, सिरसा, बटिडा और फरीदकोट में ट्रायल लगाकर पौधों और दवाओं पर होगा शोध

सफेद मक्खी का तोड़ निकालने में जुटे वैज्ञानिक

सिरसा, 5 मई (का.प्र.): हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में सफेद मक्खी के डंक से नष्ट हुई सफेद सोने की फसल के बाद अब इसका तोड़ निकालने के प्रयास व्यापक पैमाने पर शुरू हो गए हैं। नॉर्थ जोन में स्थित कपास के विशेष रिसर्च सेंटर केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, हिसार की हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी और पंजाब के लुधियाना वैज्ञानिक मिलकर इसका तोड़ निकालने में जुट गए हैं। नॉर्थ जोन में हरियाणा के हिसार, सिरसा, राजस्थान के गंगानगर व पंजाब के बटिडा और फरीदकोट का चयन ट्रायल एवं रिसर्च प्वाइंट के रूप में किया गया है। ये पांचों इलाके कॉटन कार्टी की हिस्सा हैं। यहाँ पर वैज्ञानिक विभिन्न किस्मों का ट्रायल लगाएंगे। बीज की किस्मों, दवाइयों के असर, खाद-पानी के प्रभाव, सिचाई, विजाई के समय सहित तमाम बिंदुओं पर बारीकी से रिसर्च की जाएगी। इससे पहले सफेद मक्खी के असर को कम करने के लिए पंजाब के गवर्नर की अध्यक्षता में बनी 10 सदस्यीय कमेटी ने भी इसके कारण और निदान को एक रिपोर्ट हाल में जारी कर दी है। दरअसल हरियाणा, पंजाब और राजस्थान देश के प्रमुख कपास उत्पादक जिले हैं। इन तीनों राज्यों में हर खरीफ सीजन में करीब 15 लाख हेक्टेयर रकबे में नरमे की काशत की जाती है। 2015-16 में 14 लाख 80 हजार हेक्टेयर में नरमे की काशत की गई। हरियाणा में 5 लाख 80 हजार, पंजाब में 4 लाख 50 हजार व राजस्थान में भी साढ़े 4 लाख हेक्टेयर रकबे पर नरमे की काशत की गई। नरमा विजाई के कुछ समय बाद ही जून-जुलाई माह में उत्पादक जिले हैं। इन पांचों जिलों में नॉर्थ जोन के कुल 50 लाख गांठों में से हर साल 30 लाख गांठों का उत्पादन होता है। अकेले सिरसा और हिसार जिले में हर साल 3 लाख 40 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में नरमे की काशत होती है। इस बार हरियाणा में कपास की काशत के लिए हरियाणा में 6 लाख 20 हजार हेक्टेयर, पंजाब में 5.30 लाख हेक्टेयर जबकि राजस्थान में 5 लाख हेक्टेयर रकबे का लक्ष्य निर्धारित किया है।

एवशन प्लान बनाया गया: दलीप मोंगा

पिछले वर्ष सफेद मक्खी के प्रभाव के चलते हुए नुबसान के बाद विभाग काफ़ी संजीव है। एवशन प्लान बनाया गया है। केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी और हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी मिलकर इस दिशा में काम कर रहे हैं। इस दिशा में नॉर्थ जोन में 5 विभिन्न जगहों पर ट्रायल लगाकर रिसर्च कार्य को आगे बढ़ाया जा रहा है। किसान 15 मई से पहले अमर विजाई करते हैं तो सफेद मक्खी के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

सफेद मक्खी का तोड़ निकालने में जुटे वैज्ञानिक

सिरसा, 5 मई (का.प्र.): हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में सफेद मक्खी के डंक से नष्ट हुई सफेद सोने की फसल के बाद अब इसका तोड़ निकालने के प्रयास व्यापक पैमाने पर शुरू हो गए हैं। नॉर्थ जोन में स्थित कपास के विशेष रिसर्च सेंटर केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, हिसार की हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी और पंजाब के लुधियाना वैज्ञानिक मिलकर इसका तोड़ निकालने में जुट गए हैं। नॉर्थ जोन में हरियाणा के हिसार, सिरसा, राजस्थान के गंगानगर व पंजाब के बटिडा और फरीदकोट का चयन ट्रायल एवं रिसर्च प्वाइंट के रूप में किया गया है। ये पांचों इलाके कॉटन कार्टी की हिस्सा हैं। यहाँ पर वैज्ञानिक विभिन्न किस्मों का ट्रायल लगाएंगे। बीज की किस्मों, दवाइयों के असर, खाद-पानी के प्रभाव, सिचाई, विजाई के समय सहित तमाम बिंदुओं पर बारीकी से रिसर्च की जाएगी। इससे पहले सफेद मक्खी के असर को कम करने के लिए पंजाब के गवर्नर की अध्यक्षता में बनी 10 सदस्यीय कमेटी ने भी इसके कारण और निदान को एक रिपोर्ट हाल में जारी कर दी है। दरअसल हरियाणा, पंजाब और राजस्थान देश के प्रमुख कपास उत्पादक जिले हैं। इन तीनों राज्यों में हर खरीफ सीजन में करीब 15 लाख हेक्टेयर रकबे में नरमे की काशत की जाती है। 2015-16 में 14 लाख 80 हजार हेक्टेयर में नरमे की काशत की गई। हरियाणा में 5 लाख 80 हजार, पंजाब में 4 लाख 50 हजार व राजस्थान में भी साढ़े 4 लाख हेक्टेयर रकबे पर नरमे की काशत की गई। नरमा विजाई के कुछ समय बाद ही जून-जुलाई माह में उत्पादक जिले हैं। इन पांचों जिलों में नॉर्थ जोन के कुल 50 लाख गांठों में से हर साल 30 लाख गांठों का उत्पादन होता है। अकेले सिरसा और हिसार जिले में हर साल 3 लाख 40 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में नरमे की काशत होती है। इस बार हरियाणा में कपास की काशत के लिए हरियाणा में 6 लाख 20 हजार हेक्टेयर, पंजाब में 5.30 लाख हेक्टेयर जबकि राजस्थान में 5 लाख हेक्टेयर रकबे का लक्ष्य निर्धारित किया है।

एवशन प्लान बनाया गया: दलीप मोंगा

पिछले वर्ष सफेद मक्खी के प्रभाव के चलते हुए नुबसान के बाद विभाग काफ़ी संजीव है। एवशन प्लान बनाया गया है। केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी और हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी मिलकर इस दिशा में काम कर रहे हैं। इस दिशा में नॉर्थ जोन में 5 विभिन्न जगहों पर ट्रायल लगाकर रिसर्च कार्य को आगे बढ़ाया जा रहा है। किसान 15 मई से पहले अमर विजाई करते हैं तो सफेद मक्खी के प्रभाव को कम किया जा सकता है।



Produced and Published by: **Dr. K. R. Kranthi, Director, CICR, Nagpur**
 Chief Editor: **Dr. S. M. Wasnik**
 Editors: **Dr. J. Annie Sheeba, Dr. Vishlesh Nagrare, Dr. J. Amutha, Dr. M. Saravanan**
 Digital Editor, design & Media Support: **Mr. M. Sabesh**

Publication Note: This Newsletter presented online at http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html
 Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter
 The Cotton Innovate – is published weekly by ICAR-Central Institute for Cotton Research
 Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010
 Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;
 email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in

Citation : Cotton Innovate, Issue-2, Volume-5, 2016, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.